Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

ग़ज़ल गायकी में स्त्री कलाकारों का योगदान

HARLEEN KAUR
Research Scholar, Department of Music, Guru Nanak Dev University, Amritsar.

सार: *संगीत की प्रत्येक विधा को उन्नत करने में जितना सहयोग पुरुष कलाकारों का रहा है, उतना योगदान ही महिला कलाकारों का भी माना जाता है। इस संदर्भ में संख्या का अनुपात चाहे असमान हो लेकिन प्रतिभा और अवदान (योगदान) की दृष्टि से यह अनुपात कहीं से भी कम नहीं आंका जा सकता। अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करते हुए संगीत के अन्तर्गत गायन विधा में ऐसी कई उत्कृष्ट महिला गायिकाओं के नाम हैं, जिन्होंने अपनी गायन कला के माध्यम से गायकी की एक सुदृढ़ (मजबूत) नींव तैयार की। इनमें से रसूलनबाई, सिद्देश्वरी देवी, हीराबाई बड़ौदेकर, अंजनी बाई मालपेकर, गौहरजान, चुन्नाबाई, ताराबाई शिरोडकर, मोघूबाई कुर्डीकर, गंगूबाई हंगल, एम. एस. सुब्बलक्ष्मी, गिरिजा देवी, परवीन सुलताना, प्रभा अत्रे, शोभा गुर्टू आदि के नाम उल्लेखनीय है। भारतीय संगीत की गायन कला का इतिहास उपर्युक्त नामों के बगैर पूर्ण नहीं हो सकता। इन गायिकाओं ने शास्त्रीय गायन विधा को अपनाकर अपनाकर आने वाली पीढ़ी को इस रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी। इनके अतिरिक्त गायकी की ग़ज़ल-गायन विधा में जिन महिला कलाकारों ने अपना योगदान दिया उनमें बेगम अख्तर, शमशाद बेगम, मुमताज बेगम, नूरजहाँ, मल्लिका पुखराज, आबीदा परवीन, फरीदा खानम, आदि जैसे उल्लेखनीय नाम हैं। ग़ज़ल गायकी की इन अद्वितीय फनकारों ने अपने जीवन में जो मुकाम प्राप्त कर मापदण्ड तैयार किए हैं, उसके पीछे उनकी मेहनत, संघर्ष, दृढ़ता, समर्पण, प्रतिभा, विलक्षणता और संगीत के प्रति अनुराग (प्रेम) की भावना दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने समाज की विसंगतियों से संघर्ष कर गायकी को ना केवल अपनी नियति (भाग्य) बनाया बल्कि ऐसे कीर्तिमान भी स्थापित किए, जिनका आगामी पीढ़ी सदैव अनुसरण करेगी।*

कुंजी शब्द: *संगीत, ग़ज़ल, बेगम अख्तर, नूरजहां, मल्लिका पुखराज, आबीदा परवीन*

बेगम अख्तर

ग़ज़ल कोकिला व ग़ज़ल मल्लिका जैसे विशेषण सुनते ही बेगम अख्तर का नाम अनायास ही स्मृति-पटल पर आ जाता है। ग़ज़ल, दादरा, ठुमरी आदि गाने में इनका जवाब नहीं था। बेगम अख्तर का जन्म 7 अक्तूबर 1914 को उत्तर-प्रदेश के फैज़ाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम असगर हुसैन था और माता मुश्तरीबाई स्वयं एक विख्यात गायिका थी। गायकी का प्रशिक्षण इन्होंने किराना घराने के उस्ताद अब्दुल वहीद जी से लिया। इनके अतिरिक्त उस्ताद अताहुसैन जी से भी गायन विधा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बेगम अख्तर जी ने अपनी पहली प्रस्तुति पन्द्रह वर्ष की आयु में दी। इन्होंने कुछ फिल्मों में भी काम किया और उन फिल्मों के गीतों को अपनी आवाज़ भी दी। 'रोटी' फिल्म में उन्होंने ग़ज़ल गायन भी किया, किन्तु 1945 में लखनऊ के इश्तियाक अहमद अब्बासी से शादी होने के बाद इन्हें संगीत छोड़ना पड़ा। गायकी से अलगाव लगभग पांच साल तक रहा, फिर उन्होंने लखनऊ के ही ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन पर ग़ज़ल एवं दादरा गाया और लोगों को उनकी प्यारी गायिका वापिस मिली। गायकी की इस बेजोड़ प्रतिभा ने 30 अक्तूबर 1974 को इस दुनिया को तब अलविदा कहा जब एक सांगीतिक आयोजन के दौरान उन्होंने अपनी आवाज की पिच को ऊंचा किया। तबीयत दुरुस्त न होने और तनाव के कारण वह बीमार पड़ी और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां से वह वापिस लौट ना सकी। उनकी गाई कुछ गजलें निम्नलिखित है:-

1 'दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे,
वरना कहीं तकदीर तमाशा न बना दे।'

2 'उल्टी हो गई सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया
देखा इस बीमारी-ए-दिल ने आखिर काम तमाम किया'

3 'वो जो हम में तुम में करार था तुम्हें याद हो कि न याद हो
वही यानी वादा निबाह का तुम्हें याद हो कि न याद हो'

4 ऐ मोहब्बत तेरे अंज़ाम पे रोना आया

जाने क्यों आज तेरे नाम पे रोना आया।'

भारत सरकार की ओर से उन्हें 1968 में पद्म श्री की उपाधि दी गई। 1972 में संगीत नाटक एकेडमी अवार्ड और मरणोपरांत 1975 में पदम भूषण से सम्मानित किया गया।

शमशाद बेगम

ग़ज़ल-गायन परम्परा में शमशाद बेगम एक प्रचलित नाम है। इनका जन्म 14 अप्रैल 1919 को लाहौर में हुआ। इनकी आवाज़ को सबसे पहले स्कूल में पहचान मिली और उसके बाद उनके चाचा उन्हें ज़ैनेफोन संगीत कम्पनी, लाहौर में संगीतकार गुलाम हैदर के पास ऑडीशन के लिए ले गए, जहां से उनका संगीत का सफर शुरू हो गया। हालांकि इनके पिता मीयां हुसैन बख्श इनके गाने के खिलाफ थे लेकिन नियति में संगीत की सेवा लिखी हुई थी। इनके चाचा आमिर खान ने ही शमशाद जी के पिता को मनाया और वह इस शर्त पर राज़ी हुए कि शमशाद बुर्के में ही गाना रिकार्ड करवाएंगी। चूंकि उन्होंने कभी गायकी का औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया था इसलिए हुसैन बख्श साहब और गुलाम हैदर ने उनकी कला को निखारा। इन्होंने अपने जीवन काल में हिन्दी भाषा के अतिरिक्त बंगाली, मराठी, पंजाबी, गुजराती, तमिल आदि भाषाओं में गायन किया। 1940 से 1970 के बीच गाए इनके गाने बेहद लोकप्रिय हुए और आज भी रिमिक्स हो रहे हैं। शमशाद बेगम ने अपने समय में दिग्गजों- नौशाद अली, एस. डी. बर्मन, सी. रामचंद्र, ओ. पी. नैय्यर के साथ काम किया। हिन्दी फिल्म संगीत में उनके योगदान को लेकर ओ. पी. नैय्यार अवार्ड और 2009 में पद्म भूषण अवार्ड दिया गया। इनकी गाई ग़ज़लों की एलबम 2009 में रिलीज की गई। जिसकी गजले हैं:-

1 'वो आएं हैं यह ख़्वाब है मालूम नहीं क्यों

रंगीन शब-ए-माहताब है मालूम नहीं क्यों'

2 किस कदर नाजुक ज़माना आ गया

अब उन्हें भी मुस्कुराना आ गया'

3 जिंदगी अब गुज़र भी जा बाते न कर शबाब की

रात ढली तो उड़ गई मस्ती थी इक शराब की'

4 आ भी जा आने वाले दिल भी है दीवाना भी

आँखों में बेख़्वाल भी है खाली है पैमाना भी'

25 अप्रैल 2013 को मुंबई में अपने आवास पर बेशकीमती आवाज़ की मल्लिका ने भाखरी सांस ली और अपने गीतों की विरासत को छोड़ कर चली गई।

नूरजहां

'मल्लिका-ए-तरन्नुम' की उपाधि से सम्मानित नूरजहां हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों देशों में सम्माननीय गायिका के रूप में जानी जाती हैं। इनका जन्म 21 सितंबर 1926 को पंजाब के कसूर में हुआ जो अब पाकिस्तान में है। बचपन से ही इन्हें गाने का शौक था। उनकी संगीत के प्रति दिलचस्पी को देखते हुए पिता इमदाद अली ने इन्हें उस्ताद गुलाम मोहम्मद जी से संगीत सीखने के लिए भेजा, जिनसे नूरजहां ने शास्त्रीय गायन की शिक्षा ली। सात साल की उम्र से ही इन्होंने अपनी बड़ी बहनों ईदन बाई और हैदर बांदी के साथ मंच पर गाना शुरू कर दिया था। बेहतर अवसर की तलाश में इन्होंने लाहौर का रूख किया। उसके बाद कलकता से इनके लिए रास्ते खुलते गए। मुख्तार बेगम ने नूरजहां और उनकी बहनों को कई प्रोडूयसरों से मिलाया। नूरजहां ने भारत में फिल्मों में काम करने के अलावा पाकिस्तान जाने के बाद वहां

पर भी कई फिल्मों में काम किया। अदाकारी छोड़ने के बाद पूर्णतः गायकी को अपनाया और पाकिस्तानी फिल्म 'चन्न वे', जिनका उन्होंने निर्देशन भी किया, में प्लेबैक सिंगिंग की। इनकी गाई ग़ज़लों की कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं:-

1 'निगाहें मिला कर बदल जाने वाले
मुझे तुझ से कोई शिकायत नहीं है
ये दुनिया बड़ी संगदिल है यहां पर
किसी को किसी से मुहब्बत नहीं है'।

2 'दिल का दिया जलाया मैंने दिल का दिया जलाया
तुझको कहीं न पाया दिल का दिया जलाया।

3 'जा अपनी हसरतों पर आंसू बहा के सो जा
कहीं सुन ना ले जमाना, ऐ दिल खामोश हो जा'

4 इक टीस जिगर में उठती है इक दर्द सा दिल में होता है
हम रातों को उठ कर रोते हैं जब सारा आलम सोता है

5 आशियाने की बात करते हो
दिल जलाने की बात करते हो'

मल्लिका पुखराज

लोक संगीत और ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में मल्लिका पुखराज का नाम बेहद मकबूल है। मल्लिका पुखराज का जन्म 1912 में जम्मू-कश्मीर के हमीरपुर रविवार में हुआ। सांगीतिक परिवेश में इनका झुकाव संगीत की ओर होना स्वाभाविक ही था। अतः उस्ताद बड़े गुलाम अली खान के पिता उस्ताद अली बक्श कसूरी जी से परम्परागत संगीत की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य इन्हें मिला नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इन्हें जम्मू के महाराज हरि सिंह के समक्ष गाने का अवसर मिला। मल्लिका जी की आवाज़ से वह इतने प्रभावित हुए कि इन्हें अपने दरबार में गायिका के तौर पर नियुक्त कर लिया। भारत के विभाजन के बाद यह पाकिस्तान चली गई। 1940 के दशक में जितनी लोकप्रिय मल्लिका जी की भारत में थी, उतनी ही लोकप्रियता इन्हें पाकिस्तान में भी मिली। वहां इन्होंने रेडियो पर अपनी कला का प्रदर्शन किया। अपनी ग़ज़लों के माध्यम से उनकी गायकी की प्रसिद्धि को चार चांद लगे, जिनकी उदाहरण निम्नलिखित है:-

1 कब तक दिल की खैर मनाएं कब तक राह दिखलाओगे
कब तक चौन की मोहलत दोगे कब तक याद न आयोग'

2 तेरे इश्क की इन्तेहा चाहता हूं मेरी सादगी देख क्या चाहता हूँ
सितम हो के हो वादा-ए- बेहिज़ाबी कोई बात सब्र-आज़मा चाहता हूँ

3 सुख्न दर्द का अब कहा जाए ना
कहा जाए भी तो सुना जाए ना'

आबीदा परवीन

सन् 1954 को पाकिस्तान के लरकाना में जन्मी व सूफी गायकी को देश-विदेश में प्रसिद्ध करने वाली, काफी, ग़ज़ल और कव्वाली की अतुलनीय गायिका आबीदा परवीन के नाम से सभी संगीत प्रेमी अवगत हैं। इनके पिता उस्ताद गुलाम हैदर जी ने इन्हें संगीत के साथ सूफी संस्कारों की शिक्षा भी इन्हें दी। आबीदा परवीन ने 1970 के शुरुआती दशक से अपनी कला का प्रदर्शन शुरू किया और 1990 तक आते-आते वैश्विक स्तर तक अपनी पहचान बनाई। इनकी पहली अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति कैलिफोर्निया के ठनमदं चंता में हुई। इन्होंने कई ग़ज़लकारों के कलामों को अपनी आवाज़ दी, जिनकी कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:-

1 यार को हम ने जा बजा देखा कहीं ज़ाहिर कहीं छुपा देखा
कहीं मुमकिन हुआ कहीं वाजिब कहीं फ़ानी कहीं बका देखा।

2 जब से तूने मुझे दीवाना बना रखा है
संग हर शख्स ने हाथों में उठा रखा है
उसके दिल पर भी कड़ी इश्क में गुजरी होगी
नाम जिस ने भी मोहब्बत का सज़ा रखा है।

3 कुछ इस अदा से आज वो पहलू-नशीं रहे
जब तक हमारे पास रहे हम नहीं रहे
ईमान-ओ-कुफ्र और न दुनिया-ओ-दीं रहे
ऐ इश्क-ए-शाद-बाश कि तन्हा हमीं रहे।

4 तेरे आने का धोखा जा रहा है
दिया सा रात भर जलता रहा है।

इनकी सांगीतिक प्रतिमा और अवदान (योगदान) के फलस्वरूप पाकिस्तानी सरकार की ओर से निशान-ए-इम्तियाज़ का सम्मान (2012) दिया गया और मार्च 2021 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति के हाथों सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार हिलाल-ए- इम्तियाज़ से भी नवाजा गया। इसके अतिरिक्त अन्य कई उपाधियां व पुरस्कार इनकी उपलब्धियों में जुड़े हैं। उर्दू, सिन्धी, पंजाबी, अरबी व फारसी भाषा में सशक्त गायन करने वाली व गायकी की विधा को समर्पित कलाकार अबीदा परवीन निस्संदेह संगीत सागर की अमूल्य निधि है।

फरीदा खानुम

पाकिस्तान के 'Pride of Performance' की उपाधि से सम्मानित फरीदा खानुम एक अद्वितीय शास्त्रीय एवं ग़ज़ल गायिका के तौर पर जानी जाती है। फरीदा खानुम का जन्म स्थान कलकत्ता (1929) है। इन्होंने ख़्याल, ठुमरी और दादरा का प्रशिक्षण पटियाला घराने के उस्ताद आशिक अली खान जी से लिया। 1947 के बंटवारे के बाद ये पाकिस्तान चली गई, तब इसकी उम्र 18 वर्ष थी। गायकी के सफर की शुरुआत इन्होंने 1950 में की। लोगों के बीच अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के उपरान्त इन्होंने पाकिस्तानी रोडयो के माध्यम से लोकप्रियता अर्जित की। फैयाज़ फाज़मी की लिखी ग़ज़ल 'आज जाने की ज़िद न करो' को इनकी आवाज़ ने प्रसिद्धि के शिखर तक पहुंचाया। फरीदा खानुम जी की ग़ज़लें हर पीढ़ी के श्रोताओं के लिए आकर्षण का केन्द्र रही है। जिन ग़ज़लों का गायन इन्होंने किया उनमें से चंद उदाहरण है:-

1 मोहब्बत करने वाले कम न होंगे

तेरी महफिल में लेकिन हम न होंगे

जमाने भर के ग़म या इक तेरा ग़म

ये ग़म होगा तो कितने ग़म न होंगे।

2 दिल ज़लाने की बात करते हो आशियाने की बात करते हो

सारी दुनिया के रंज-ओ-ग़म देकर मुस्कुराने की बात करते हो।

3 हिज्र की रात याद आती है

फिर वही बात याद आती है।

4 हाल ऐसा नहीं कि तुमसे कहें

एक झगड़ा नहीं कि तुमसे कहें।

निष्कर्ष

स्त्री ग़ज़ल गायकी की परम्परा का निर्वाह करने वाली ग़ज़ल गायिकाओं ने अपनी कला के माध्यम से गायकी की इस विधा को अग्रसर (आगे बढ़ाने) करने का महत्ती काम किया। इन महान् विभूतियों द्वारा गाई ग़ज़लें ग़ज़ल गायकी में न केवल अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है बल्कि इस विधा के उन्नत कलात्मक पक्ष की गवाही भी देती हैं।

संदर्भ

1. शर्मा (डॉ.) सत्यवती, (1995), संगीत का समाजशास्त्र, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. परमार नदीम, (2007), ग़ज़ल दी वियकरण, चेतना प्रकाशन, लुधियाना
3. जैतोई दीपक, (1997), ग़ज़ल की है, लिटरेचर हाउस, अमृतसर
4. महिला- संगीत अंक, (2012), संगीत कार्यालय हाथरस, जनवरी-फरवरी